Syllabus Coverage in 2 Days **80 TOPICS**

8th Edition

सामान्य ज्ञान एवं समसामयिकी

CAPSULE

2025

समावेश

- सामान्य ज्ञान 74 टॉपिक्स में विभाजित
- समसामयिकी 6 टॉपिक्स में विभाजित
- बैंकिंग, रेलवे, कृषि, विज्ञान व तकनीक, विधेयक व अधिनियम, नीतियां व योजनाएं, विश्व और भारतीय परिदृश्य पर परीक्षा विशेष सामान्य ज्ञान

Powered by - इंफोग्राफिक्स/ चार्ट/ तालिका/ नवीनतम समसामयिकी

DISHA™ Publication Inc

सामान्य ज्ञान
एवं समसामयिकी

CAPSULE
2025

DISHA™
Publication Inc

In the interest of student community

Circulation of softcopy of Book(s) in pdf or other equivalent format(s) through any social media channels, emails, etc. or any other channels through mobiles, laptops or desktops is a criminal offence. Anybody circulating, downloading, storing, softcopy of the Book on his device(s) is in breach of the Copyright Act. Further Photocopying of this book or any of its material is also illegal. Do not download or forward in case you come across any such softcopy material.

DISHA Publication Inc.

A-23 FIEE Complex, Okhla Phase II

New Delhi-110020

Tel: 49842349/ 49842350

© Copyright DISHA Publication Inc.

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced in any form without prior permission of the publisher. The author and the publisher do not take any legal responsibility for any errors or misrepresentations that might have crept in.
We have tried and made our best efforts to provide accurate up-to-date information in this book.

Typeset By

DISHA DTP Team

Buying Books from Disha is always Rewarding

This time we are appreciating your writing Creativity.

Write a review of the product you purchased on Amazon/ Flipkart

Take a screen shot / Photo of that review

Scan this QR Code ➔

Fill Details and submit | That's it ... Hold tight n wait.
At the end of the month, you will get a surprise gift from Disha Publication

Scan this QR code

Write To Us At

feedback_disha@aiets.co.in

www.dishapublication.com

DISHA™ Publication Inc

विषय सूची

	सामान्य ज्ञान	1-148
	इतिहास	
1.	प्रागैतिहासिक काल और सिंधु घाटी सभ्यता	1-2
2.	वैदिक काल	3-4
3.	धार्मिक आंदोलन	5-6
4.	मौर्य काल	7-8
5.	मौर्योत्तर काल	9-10
6.	गुप्त काल	11-12
7.	गुप्तोत्तर काल	13-14
8.	दिल्ली सल्तनत	15-16
9.	भक्ति सूफी आंदोलन	17-18
10.	विजयनगर साम्राज्य	19-20
11.	मुगल काल	21-22
12.	दक्षिण भारत	23-24
13.	यूरोपीयों का आगमन	25-26
14.	भारत में अंग्रेजों की विजय	27-28
15.	प्रमुख गवर्नर जनरल एवं वायसराय	29-30
16.	ब्रिटिश शासन और नीतियां	31-32
17.	1857 का विद्रोह और नरमपंथी	33-34
18.	सामाजिक और धार्मिक आंदोलन	35-36
19.	राष्ट्रीय आंदोलन	37-38
20.	गांधीवादी युग	39-40
21.	स्वतंत्रता की ओर	41-42
22.	विश्व इतिहास (क्रांतियां और विश्व युद्ध)	43-44
	कला और संस्कृति	
23.	चित्रकारी	45-46
24.	संगीत और नृत्य	47-48
25.	मेला, त्यौहार और हस्तशिल्प	49-50
	भूगोल	
26.	भू-आकृति विज्ञान	51-52
27.	समुद्रशास्त्र	53-54
28.	जलवायु विज्ञान	55-56
29.	सौर मण्डल	57-58
30.	भारत का भूगोल-1	59-60
31.	भारत का भूगोल-2	61-62
32.	मानव भूगोल	63-64
33.	विश्व भूगोल	65-66
	पर्यावरण	
34.	बुनियादी अवधारणाएँ	67-68
35.	अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और भारत का पर्यावरणीय कानून	69-70
36.	जलवायु परिवर्तन	71-72
37.	जैव-विविधता	73-74
	राजव्यवस्था	
38.	निर्माण और प्रस्तावना	75-76
39.	मौलिक अधिकार	77-78

40.	मौलिक कर्त्तव्य और राज्य के नीति निदेशक तत्व	**79-80**
41.	संघीय कार्यपालिका एवं विधायिका	**81-82**
42.	राज्य कार्यपालिका एवं विधायिका	**83-84**
43.	न्यायपालिका	**85-86**
44.	संवैधानिक एवं गैर-संवैधानिक निकाय	**87-88**
45.	पंचायती राज और नगर निगम	**89-90**
46.	सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक निर्णय	**91-92**

अर्थव्यवस्था

47.	व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र	**93-94**
48.	राष्ट्रीय आय	**95-96**
49.	मुद्रा एवं पूँजी बाजार	**97-98**
50.	विदेशी व्यापार	**99-100**

सामान्य विज्ञान

भौतिक विज्ञान

51.	गति और बल	**101-102**
52.	कार्य, ऊर्जा और शक्ति	**103-104**
53.	गुरुत्वाकर्षण	**105-106**
54.	प्रकाश	**107-108**
55.	ध्वनि	**109-110**
56.	विद्युत और चुंबकत्व	**111-112**

रसायन विज्ञान

57.	परमाणु और अणु	**113-114**
58.	ठोस, द्रव और गैस	**115-116**
59.	धातु और अधातु	**117-118**
60.	अम्ल, क्षार और लवण	**119-120**
61.	कार्बन और उसके यौगिक	**121-122**

जीव विज्ञान

62.	कोशिका और ऊतक	**123-124**
63.	जीवों का जैविक वर्गीकरण	**125-126**
64.	जीवन प्रक्रियाएं	**127-128**
65.	प्रजनन	**129-130**
66.	पोषण और रोग	**131-132**

परीक्षा विशेष

67.	कृषि	**133-134**
68.	भारतीय रेलवे	**135-136**
69.	बैंकिंग	**137-138**
70.	विज्ञान और प्रौद्योगिकी	**139-140**
71.	विधेयक एवं अधिनियम	**141-142**
72.	योजनाएं और नीतियां	**143-144**
73.	भारतीय परिदृश्य	**145-146**
74.	विश्व परिदृश्य	**147-148**

समसामयिकी 149-160

75.	राजनीतिक	**149-150**
76.	आर्थिक	**151-152**
77.	सामाजिक	**153-154**
78.	पर्यावरण और तकनीकी	**155-156**
79.	विधेयक एवं अधिनियम और नीतियां एवं योजनाएं	**157-158**
80.	खेल और पुरस्कार	**159-160**

1 प्रागैतिहासिक काल और सिंधु घाटी सभ्यता

प्रागैतिहासिक काल

(I) प्रागैतिहासिक काल का वर्गीकरण

- प्रागैतिहासिक काल को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है–

(क) पुरापाषाण काल (25 लाख ई. पू. से 10 हजार ई. पू. तक)
(ख) मध्य पाषाण काल (10 हजार ई. पू. से 6 हजार ई. पू. तक)
(ग) नव पाषाण काल (6 हजार ई. पू. से 1 हजार ई. पू. तक)

(क) पुरा पाषाण काल:

निम्न पुरा पाषाण काल:

यह काल अधिकांशत: हिम युग में ही बीता पृथ्वी की सतह का बहुत अधिक भाग, मुख्यत: अधिक ऊंचाई पर का भाग बर्फ से ढंका था।

- इस काल में कुल्हाड़ी, विदारिणी और खंडक चापर (गंडासा) का प्रयोग होता था।

मध्य पुरा पाषाण काल

- इस काल के उपकरणों में चापर, ब्लेड, बेधक, व्यूरिन, चान्द्रिक स्क्रपर तथा छिद्रक आदि हैं। इस कारण ही यह काल फलक संस्कृति वाला काल कहलाया।

उच्च पुरा पाषाण काल

- इस काल में नमी कम हो गई। इस अवस्था का विस्तार हिम युग की उस अंतिम अवस्था के साथ रहा जब जलवायु अपेक्षाकृत गर्म हो गई।
- नए चकमक उद्योग की स्थापना तथा आधुनिक प्रारूप के मानव (होमोसेपिएंस) का उदय।

(ख) मध्य पाषाण काल

- यह काल पुरा पाषाणकाल तथा नवपाषाण काल दोनों की सम्मिश्रित विशिष्टताओं का प्रदर्शन करता है।
- इस युग में पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं में परिवर्तन हुए तथा मानव के लिए नए क्षेत्रों की ओर अग्रसर होना संभव हुआ।

(ग) नव पाषाण काल

- विश्व स्तर पर इस काल की शुरुआत 9000 ई. पू. से होती है।
- सर्वप्रथम 1860 ई. में 'ली मेसुरियर' ने इस काल का प्रथम प्रस्तर उपकरण उत्तर प्रदेश की टौंस नदी की घाटी से प्राप्त किया।
- इस सभ्यता के मुख्य केंद्रबिंदु थे– कश्मीर, सिंध प्रदेश, बिहार झारखंड, बंगाल, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, असम आदि।
- प्राप्त साक्ष्यों के अनुसार सिंध और बलूचिस्तान की सीमा पर स्थित 'कच्छी मैदान' में बोलन नदी के किनारे 'मेहरगढ़' नामक स्थान पर कृषि कार्य का प्रारम्भ हुआ।

(II) आद्य ऐतिहासिक काल

- आद्य ऐतिहासिक काल को दो भागों में विभक्त किया जाता है–

(i) ताम्र पाषाण काल (3500 ई. पू. - 1200 ई. पू.)
(ii) लौह काल (1100 ई. पू. - 600 ई. पू.)

- आद्य ऐतिहासिक काल के अंतर्गत प्रागैतिहासिक काल, हड़प्पा सभ्यता तथा वैदिक काल आते हैं।

ताम्र पाषाणिक काल

- जिस काल में मनुष्य ने पत्थर एवं ताँबे के औजारों का साथ-साथ प्रयाग किया, उस काल को ताम्र पाषाणिक काल कहते हैं।
- ताम्र पाषाण काल के लोग मुख्यत: ग्रामीण समुदाय के थे।
- भारत में ताम्र पाषाण अवस्था के मुख्य क्षेत्र दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (अहार एवं गिलुंड) पश्चिमी मध्य प्रदेश (मालवा, कयथा और एरण) पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिणी-पूर्वी भारत है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- 1921 में दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा की तथा 1922-23 में डॉ. आर. डी. बनर्जी के नेतृत्व में मोहनजोदड़ो की खुदाई का काम प्रारंभ हुआ तो एक आर्य पूर्व सभ्यता प्रकाश में आयी।
- सिंधु घाटी सभ्यता के अन्तर्गत पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश का सीमान्त भाग शामिल था।
- यह सभ्यता उत्तर में जम्मू के माण्डा से लेकर दक्षिण में नर्मदा के मुहाने पर स्थित दैमाबाद तथा पूर्व में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के आलमगीरपुर से लेकर पश्चिम में बलूचिस्तान के मकरान समुद्रतट पर स्थित सुत्कांगेंडोर तक विस्तृत थी।
- इस सभ्यता का समूचा क्षेत्र त्रिभुजाकार है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 12,99,600 वर्ग किमी है, जो मेसोपोटामिया और मिस्र दोनों से बड़ा है।

नगर योजना

- नगर योजना इस सभ्यता की प्रमुख विशेषता थी। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो इसके प्रमुख नगर थे। नगर मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित थे– पश्चिम की ओर ऊँचा दुर्ग था और पूर्व की ओर नगर का निचला हिस्सा था।
- धौलावीरा और बनावली स्थलों पर दीवार से घिरा एक ही टीला है। नगरों में सड़कें और मकान विधिवत बनाए गए थे। सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त अन्नागार सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है जो 45.71 मीटर लम्बी तथा 15.23 मीटर चौड़ी है।

सिंधु लिपि

- सिंधु सभ्यता की लिपि का सबसे पुराना नमूना 1853 ई. में मिला था तथा 1923 तक पूरी लिपि प्रकाश में आ चुकी थी।
- इस लिपि में 64 मूल अक्षर (चिह्न) तथा 250 से 400 तक चित्राक्षर (पिक्टोग्राफ) हैं। चित्र के रूप में लिखा प्रत्येक अक्षर किसी ध्वनि, वस्तु या भाव का सूचक है। यह लिपि मूलतः भाव-चित्रात्मक है।

मुहर

- सिंधु सभ्यता की अधिकांश मुहरें सेलखड़ी से बनायी जाती थीं जो प्रायः वर्गाकार और आयताकार होती थीं। वर्गाकार मुहरों पर पशुपति की आकृति एवं मुद्रालेख तथा आयताकार मुहरों पर केवल मुद्रालेख हैं। वर्गाकार मुहरें सर्वाधिक संख्या में मिली हैं।

सिन्धु सभ्यता के निर्माता

विद्वान	निर्माता
• राखाल दास बनर्जी –	द्रविड़
• ह्वीलर एवं कौसाम्बी –	मेसोपोटामिया
• फेयर सर्विस, रोमिलाथापर –	ईरानी बलूची प्रभाव
• अमलानन्द घोष, आलचिन, धर्मपाल	देशी प्रभाव
• गार्डन चाइल्ड –	सुमेरियन
• डॉ. लक्ष्मण स्वरूप – एवं रामचन्द्र	आर्य

प्रमुख स्थल : एक नजर में

स्थल	अवस्थिति	खोजकर्ता	प्रमुख साक्ष्य
हड़प्पा	रावी नदी, मोण्टगोमरी जिला (पाकिस्तान)	दयाराम साहनी (1921)	कब्रिस्तान R-37, अन्नागार, 16 भट्ठियां, श्रमिक निवास, शंख का बना बैल, धोती पहने मूर्ति, कांसे का दर्पण एवं इक्का, बर्तन पर मछुआरे का चित्र, मंजूषा।
मोहनजोदड़ो (अर्थ:मृतकों का टीला)	सिंधु नदी, लरकाना, (पाकिस्तान)	राखालदास बनर्जी (1922)	स्नानागार, कांसे की नर्तकी, अन्नागार, कुम्हार के 6 भट्ठे, सूती कपड़ा, हाथी का कपाल, शतरंज की गोलियां, दाढ़ीयुक्त साधु, पशुपति शिव अंकित मुहर।
लोथल	भोगवा नदी, (गुजरात)	रंगनाथ राव (1957)	सोने के मनके, मनका कारखाना, अन्नागार, गोदीवाड़ा (बंदरगाह), युग्म शावाधान, धान के प्रमाण।
कालीबंगा (अर्थ-काले रंग की चूड़ी)	घग्घर नदी (राजस्थान)	अमूलानन्द घोष (1953/60)	बेलनाकार मुहर, हल द्वारा जुते खेत, पक्की मिटटी की हल आकृति, भूकम्प का साक्ष्य, अग्निकुण्ड, कच्ची एवं अलंकृत ईंट, ऊँट की हड्डियां।
सुरकोटडा	कच्छ (गुजरात)	जे. पी. जोशी (1954)	घोड़े की हड्डियां, कलश
रंगपुर	मादरा नदी, (गुजरात)	रंगनाथ राव (1957)	घोड़े की मृण्मूर्ति, धान की भूसी, कच्ची ईंटों का दुर्ग, अस्तर फलक।
सुत्कांगेंडोर	दाश्क नदी, बलूचिस्तान (पाकिस्तान)	आरेल स्टाइन एवं जॉर्ज डेल्स (1927)	राख से भरा बर्तन, तटीय व्यापारिक चौकी, तांबे की कुल्हाड़ी, मिट्टी की चुड़ियां।
चन्हूदड़ो	सिंधु नदी, सिंध (पाकिस्तान)	एन. जी. मजूमदार (1931)	मिट्टी की बैलगाड़ी का प्रारूप, मुहर निर्माण केंद्र, दवात, कांसे की खिलौना गाड़ी, मनका कारखाना, लिपस्टिक के साक्ष्य।
धौलावीरा (अर्थ-सफेद कुआँ)	खादिर बेत नदी, कच्छ (गुजरात)	बी. बी. लाल (1959), आर. एस. बिष्ट (1990-91)	खेल का मैदान, पत्थर की बनी नेवले की मूर्ति, तीन भागों में विभाजित एकमात्र शहर, नागरिक उपयोग के लिए सबसे बड़ा अभिलेख।
बनावली	रंगोई नदी (हरियाणा)	आर. एस. विष्ट (1973)	स्वर्णपट्ट, मिट्टी के मनके, तांबे की बंसी, मिट्टी के बने हल का प्रतिरूप, रक्षा दीवार के बाहर गहरी-चौड़ी खाई, अपवहन तंत्र का अभाव।

2 वैदिक काल

वैदिक संस्कृति

- वैदिक संस्कृति के अंतर्गत चारों वेदों – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद – के अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक एवं उपनिषद भी आते हैं। वैदिक साहित्य की रचना आर्यों ने की थी, जो उनसे संबंधित जानकारी के मुख्य स्रोत हैं।
- भारत आगमन के क्रम में आर्य मध्य एशिया और ईरान पहुँचे, तत्पश्चात् वे पंजाब आए, जिसे ऋग्वेद में **सप्तसिन्धव** कहा गया है, और पूरे उत्तर भारत में फैल गए।

ऋग्वैदिक काल

- ऋग्वैदिक आर्य अफगानिस्तान, पंजाब, सिन्ध के एक भाग, कश्मीर, उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में फैले हुए थे। ऋग्वेद में अफगानिस्तान की नदियों – कुभा, क्रमु, **गोमती**, सुवास्तु का उल्लेख है।
- ऋग्वेद में उत्तर भारत की कुल 42 नदियों का उल्लेख है, जो अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में यमुना नदी तक फैली हुई थीं।
- ऋग्वेद में कुभा (काबुल), सुवास्तु (स्वात), क्रुमु(कुर्रम), गोमती (गोमल), वितस्ता (झेलम), अस्किनी (चिनाब), पुरुष्णी (रावी), शुतुद्री (सतलज), विपाशा (व्यास), सदानीरा (गण्डक), दृषद्वती (घग्घर), मरुद्वृद्धा (मरुवर्मन), सुषामा (सोहन) आदि नदियों का उल्लेख है।

राजनीतिक स्थिति

- ऋग्वैदिक राजनीतिक व्यवस्था एक कबीलाई संरचना पर आधारित थी। यह एक जनजातीय सैन्य तंत्र था तथा अधिशेष उत्पादन प्राप्त करने का प्राथमिक स्वरूप था।
- इस काल में राजा को **जनस्यगोपा, विशपति, गणपति, गोपति, पुरभेत्ता** आदि नामों से जाना जाता था।

सामाजिक जीवन

- आर्यों ने खानाबदोशी जीवन छोड़कर पारिवारिक जीवन शुरू कर दिया था। परिवार पितृसत्तात्मक था तथा पिता परिवार का मुखिया होता था। 'गोत्र' सामाजिक संगठन का आधार था।
- लोगों की आस्था सबसे अधिक अपने कबीले के प्रति रहती थी। समाज तीन भागों में विभक्त हो गया था– पुरोहित, राजन्य तथा सामान्य लोग। वर्ण शब्द **कर्म** का द्योतक था।
- इस काल में बाल विवाह, सती प्रथा, तलाक, पर्दा प्रथा, बहुपत्नीत्व प्रथा आदि का प्रचलन नहीं था। **विधवा विवाह** और **नियोग प्रथा** का प्रचलन था। जीवनभर अविवाहित रहने वाली लड़कियों को **अमाजू** कहा जाता था।
- ऋग्वैदिक आर्य शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों थे। चावल और जौ भोज्य पदार्थ थे। फल, दूध, दही, घी, खीर (क्षीर पकोदनम) का प्रयोग किया जाता था, जौ के सत्तू में दही मिलाकर **करभ** तैयार किया जाता था। भेड़, बकरी और बैल का मांस खाया जाता था। घोड़े का मांस अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर खाया जाता था। गाय को अघन्या (न मारने योग्य) कहा गया है।

आर्थिक जीवन

- पशुपालन की तुलना में कृषि गौण पेशा था। गायों का इतना महत्त्व था कि जीवन से जुड़ी महत्त्वपूर्ण गतिविधियों को गाय से जोड़ दिया गया था। आर्यों की अधिकांश लड़ाइयाँ गायों को लेकर हुई हैं।
- ऋग्वेद में **गविष्टि** (गाय का अन्वेषण) युद्ध का पर्याय है। युद्ध के लिए **गवेषण, गव्य, गेसू, गम्य** आदि शब्द प्रचलित थे। राजा को गोपति तथा धनी व्यक्ति को **गोमत** कहा जाता था। ऋग्वेद में 'गो' शब्द का प्रयोग 176 बार आया है।
- मुद्रा के रूप में **निष्क** एवं **शतमान** का उल्लेख मिलता है, किंतु ये नियमित सिक्के नहीं थे। ये स्वर्णाभूषण थे जो विनिमय का माध्यम बन गए।

ऋग्वेद में प्रमुख शब्दों का उल्लेख

शब्द	उल्लेख की संख्या	शब्द	उल्लेख की संख्या
• इन्द्र	250	बृहस्पति	11
• अग्नि	200	जन	275
• वरुण	30	विश	171
• विष्णु	100	वर्ण	23
• माता	234	सभा	08
• सोम	144	समिति	09
• गंगा	01	गण	46
• यमुना	03	राष्ट्र	10
• रुद्र	03	पृथ्वी	01
• विदथ	122		

धार्मिक जीवन

- आर्यों का धार्मिक जीवन विशद् और पवित्र था। लोग **बहुदेववादी** थे। धर्म मुख्यत: प्रकृति पूजा और यज्ञ केंद्रित था। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में निर्गुण ब्रह्म और **ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति** का वर्णन है।
- ऋग्वैदिक देवताओं का वर्गीकरण तीन भागों में किया गया है।

(i) **पृथ्वी के देवता :** अग्नि, सोम, बृहस्पति, सरस्वती, पृथ्वी आदि।

(ii) **अंतरिक्ष के देवता :** इन्द्र, रुद्र, वायु, पर्जन्य, प्रजापति, यम, अदिति, मातरिश्वन आदि।

(iii) **आकाश (द्युस्थान) के देवता :** द्यौस, सूर्य, मित्र, वरुण, सवितृ, विष्णु, पूषन, आदित्य, ऊषा, आश्विन आदि।

उत्तर वैदिक काल

- इसका काल 1000 से 600 ई. पू. तक माना जाता हैं। चित्रित धूसर मृद्भाण्ड तथा लोहे के उपकरण इस काल के महत्त्वपूर्ण साक्ष्य

है। पाकिस्तान के गांधार से 1000 ई. पू. के लोहे के उपकरण प्राप्त हुए हैं।

राजनीतिक स्थिति

- इस काल में ऋग्वैदिक काल के कबीलाई राज्य, क्षेत्रीय राज्यों में परिवर्तित होने लगे। 'जन' का स्थान जनपद ने ले लिया। युद्ध गायों के लिए न होकर क्षेत्र के लिए होने लगा। कबीलाई राज्य संयुक्त होकर बड़े और शक्तिशाली राज्य बनने लगे।
- शतपथ ब्राह्मण में रत्निन की संख्या 12 है। जो इस प्रकार है-

(i) पुरोहित (ii) सेनानी
(iii) युवराज (iv) महिषि (रानी)
(v) सूत (राजा का सारथी) (vi) ग्रामणी (गाँव का मुखिया)
(vii) प्रतिहारी या क्षत्र (द्वारपाल) (viii) संगृहित्री (कोषाध्यक्ष)
(ix) भागदुध (कर संग्रहकर्ता) (x) अक्षवाप (पासे के खेल में राजा का सहयोगी) (xi) पालागल (संदेशवाहक)
(xii) गोविकर्तन (शिकार में राजा की सहायता करने वाला)।

सामाजिक स्थिति

- इस काल में वर्णव्यवस्था का आधार कर्म न होकर जन्म हो गया। वर्ण व्यवस्था में कठोरता आने लगी। सामाजिक विभाजन चार वर्णों में हो गया– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
- सर्वप्रथम **जावालोपनिषद्** में चारों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास) का उल्लेख मिलता है। **गोत्र** की अवधारणा पहली बार इसी काल में आयी। गोत्र, अर्थात् वह स्थान जहाँ पूरे गोत्र का गोधन रखा जाता था। कालांतर में एक ही मूल पुरुष से उत्पन्न व्यक्ति एक गोत्र के कहे जाने लगे।

आर्थिक स्थिति

- यजुर्वेद में ब्राहि (धान), यव (जौ), मुद्ग (मूंग), माण (उड़द) गोधूम (गेहूँ), मसूर आदि अनाजों का उल्लेख है। अनाज मापने का पात्र **उर्दर** कहलाता था। धातु के चोंच वाले फाल (**प्रवीरवन्त**) का उल्लेख मिलता है। इन्द्र को **सुनासिर** (हलवाहा) कहा गया है।
- मुद्रा ज्ञात था, किन्तु लेन-देन विनिमय द्वारा ही होता था। बाट की मूलभूत ईकाई कृष्णल थी। **शतमान** सम्भवत: चांदी की मुद्रा थी। **रक्तिका** एवं **गुंजा** तौला की **काई** थी। **निष्क** संभवत: 320 रत्ती का एक स्वर्ण ढेला था।

धार्मिक स्थिति

- इस काल में ऋग्वैदिक देवताओं का महत्व घट गया तथा नए देवताओं को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। इन्द्र, वरुण आदि का स्थान प्रजापति, विष्णु एवं रुद्र-शिव ने ले लिया।
- इस काल के अंतिम दौर में यज्ञों, कर्मकाण्डों तथा पुरोहितवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया का जन्म हुआ।

वैदिक साहित्य

- वैदिक साहित्य के अन्तर्गत चार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् तथा वेदांग आते हैं।

ऋग्वेद

- इसमें 10 मण्डल, 1028 सूक्त तथा 10, 462 श्लोक हैं। सूक्तों में बालखिल्य सूक्त भी शामिल हैं। ऋग्वेद का दूसरा से सातवां मण्डल सबसे पुराना है तथा दसवाँ मण्डल सबसे नया है।
- गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में है, जो सूर्य को समर्पित है तथा रचयिता विश्वामित्र हैं।

सामवेद

- कुल ऋचाएँ 1,875, जिसमें से 75 को छोड़, शेष ऋग्वेद से लिए गए हैं। इसके दो भाग हैं- आर्चिक तथा गान। इसके तीन पाठ हैं- **कौमुथ**, **जैमिनीय** तथा **राणायनीय संहिता**।
- यह भारतीय संगीतशास्त्र पर प्रथम पुस्तक है। इसके पद्य गाने योग्य हैं।

यजुर्वेद

- इसमें 40 मण्डल तथा 1549 मंत्र हैं। इसके दो भाग हैं- **शुक्ल** तथा **कृष्ण** यजुर्वेद। शुक्ल में मात्र मंत्रों का संग्रह है, किन्तु कृष्ण में मंत्र तथा गद्य काव्य दोनों का संकलन है।

अथर्ववेद

- इसकी रचना **अथर्वा ऋषि** ने की थी। इसकी दो शाखाएँ हैं– **शौनक** एवं **पिप्लाद**। इसे **ब्रह्मवेद**, **भैषज्य वेद** तथा **महीवेद** भी कहा जाता है।
- इसमें वास्तुशास्त्र से संबद्ध महत्त्वपूर्ण ज्ञान का वर्णन है। इसमें रोग निवारण और जादू-टोनों की जानकारी दी गयी है।

ब्राह्मण

- कर्मकाण्डों की व्याख्या करने के लिए ब्राह्मणों की रचना की गयी। गद्य में लिखे गए ब्राह्मणों में यज्ञ को आनुष्ठानिक महत्त्व दिया गया है।

आरण्यक

- इनकी रचना ऋषियों द्वारा जंगल में की गयी थी। इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय दर्शन, रहस्यवाद तथा प्रतीकवाद है।

उपनिषद्

- यह प्राचीन दार्शनिक विचारों का संग्रह हैं। इसकी संख्या 108 है। इसमें मुख्य रूप से आत्म-ब्रह्म के संबंधों पर चर्चा है। ब्रह्म विषयक होने के कारण इन्हें **ब्रह्म विद्या** भी कहा जाता है।

वेद, उनके ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् एवं उपवेद

वेद	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्	उपवेद
• **ऋग्वेद**	ऐतरेय, कौषितकी	ऐतरेय, कौषितकी	ऐतरेय, कौषितकी	आयुर्वेद
• **सामवेद**	पंचविश, छांदोग्य, षड्विश, जैमिनीय	छांदोग्य, जैमिनीय	छांदोग्य, केन	गंधर्व वेद
• **यजुर्वेद**	तैत्तरीय, शतपथ	वृहदारण्यक, तैत्तरीय	श्वेताश्वर, ईश, वृहदारण्यक, मैत्रायणी, कठ, तैत्तरीय	धनुर्वेद
• **अथर्ववेद**	गोपथ	_____	मुण्डक, प्रश्न, माण्डुक्य	शिल्पवेद

3 धार्मिक आंदोलन

जैन धर्म

- ऋषभदेव जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर थे, जिनका जन्म अयोध्या में हुआ था तथा इन्होंने कैलाश पर्वत पर अपना शरीर त्यागा था। इन्हें **आदिनाथ** भी कहा जाता है। इनकी तथा अरिष्टनेमि की चर्चा ऋग्वेद में हैं।
- पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर थे। ये काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र थे। उनकी माता **वामा** तथा पत्नी **प्रभावती** उनके अनुयायी थीं।
- 30 वर्ष की आयु में उन्होंने संन्यास लिया तथा 83 दिनों की घोर तपस्या के पश्चात् उन्हें परम ज्ञान (कैवल्य) प्राप्त हुआ। उनके पास 8 गण और 8 गणधर थे।
- महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर तथा वास्तविक संस्थापक थे। इनका मूल नाम वर्द्धमान था। इनके पिता सिद्धार्थ, ज्ञातृक क्षत्रियों के संघ के प्रधान थे, जो वज्जि संघ का एक प्रमुख सदस्य था।

वर्द्धमान महावीर : जीवन परिचय

- **जन्म** – 540 ई. पू. कुण्डग्राम (वैशाली)
- **माता** – त्रिशला (विदेहदत्ता) लिच्छवी
- **पिता** – सिद्धार्थ (ज्ञातृक कुल के प्रधान)
- **पत्नी** – यशोदा (कुण्डिन्य गोत्र की कन्या)
- **पुत्री** – प्रियदर्शना या अर्णोज्जा
- **दामाद** – जमालि
- **मृत्यु** – 468 ई. पू. पावा (नालंदा) में राजा हस्तिपाल के यहाँ

- 12 वर्षों की कठोर तपस्या के पश्चात् **जृम्भिक** गाँव के समीप **ऋजुपालिका** नदी के तट पर एक **साल वृक्ष** के नीचे वर्द्धमान को कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ, जिसके बाद वे **केवलिन** कहलाए। सभी इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण उन्हें **जिन** अर्थात् विजेता कहा गया। तपस्या के रूप में अद्‌भुत पराक्रम दिखाने के कारण उन्हें **महावीर** एवं निर्ग्रन्थ (बन्धन रहित) कहा गया।

जैन धर्म के सिद्धान्त एवं दर्शन

- पूर्व जन्म के कर्मफल को समाप्त करने एवं वर्तमान जन्म के कर्मफल से बचने के लिए महावीर ने त्रिरत्न का सिद्धांत दिया–
  (i) सम्यक् दर्शन (ii) सम्यक् ज्ञान
  (iii) सम्यक् आचरण।
- सम्यक् ज्ञान पाँच प्रकार के होते हैं–
  (i) मति (इंद्रिय जनित ज्ञान) (ii) श्रुति (श्रवण ज्ञान)
  (iii) अवधि (दिव्य ज्ञान)
  (iv) मनः पर्याय (दूसरे के मन की बात जान लेना)
  (v) कैवल्य ज्ञान (सर्वोच्च ज्ञान)।
- **पंचव्रत (महाव्रत) :** पार्श्वनाथ ने अपने शिष्यों को चार महाव्रत पालन करने की सलाह दी। महावीर ने इसमें पाँचवाँ व्रत ब्रह्मचर्य जोड़ा। ये पाँच महाव्रत हैं– (i) सत्य (ii) अहिंसा (iii) अस्तेय (iv) अपरिग्रह (v) ब्रह्मचर्य।
- गृहस्थ जीवन व्यतीत करनेवाले जैनियों के लिए भी इन्हीं व्रतों की व्यवस्था है, किंतु उनकी कठोरता में कमी कर दी गयी है, इसलिए इन्हें **अणुव्रत** कहा गया है।
- मोक्ष प्राप्ति हेतु महावीर ने **अनन्त चतुष्ट्य** की संकल्पना की। ये चार है– (i) अनंत ज्ञान (ii) अनंत दर्शन (iii) अनंत वीर्य (iv) अनंत सुख।
- **श्वेताम्बर के विचार :** मोक्ष हेतु वस्त्र त्याग आवश्यक नहीं, स्त्रियों को निर्वाण का अधिकार, कैवल्य प्राप्ति के पश्चात् भी भोजन आवश्यक, महावीर विवाहित, जैन साहित्य मान्य, 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थी, उपसंप्रदाय (पुजेरा, स्थानकवासी, थेरापंथी)।
- **दिगम्बर के विचार :** मोक्ष प्राप्ति हेतु वस्त्र त्याग आवश्यक, स्त्रियों का निर्वाण संभव नहीं, कैवल्य प्राप्ति के बाद भोजन की आवश्यकता नहीं, महावीर अविवाहित, जैन साहित्व मान्य नहीं; केवल भद्रबाहु की शिक्षा मान्य. 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ पुरुष, उपसंप्रदाय (बीसपंथी, थेरापंथी, तारणपंथी, गुमानपंथी, तोतापंथी)।

जैन संगीतियां

संगीति (सम्मेलन)	समय	स्थान	अध्यक्ष	कार्य
प्रथम	322-298 ई. पू.	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	12 अंगों का संकलन, धर्म दो शाखाओं– श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में विभक्त।
द्वितीय	512 ई. पू.	वल्लभी	देवर्धि क्षमा. श्रमण	11 अंग लिपिबद्ध, 12 उपांगों का संकलन।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के प्रणेता गौतम बुद्ध ने 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया, जिसे बौद्ध ग्रंथों में **महाभिनिष्क्रमण** कहा गया है।
- छह वर्ष की कठोर तपस्या के पश्चात् 35 वर्ष की आयु में गया के समीप उरवेला नामक स्थान पर निरंजना (फल्गु) नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा को ज्ञान (निर्वाण) प्राप्त हुआ और वे बुद्ध कहलाए।
- निर्वाण प्राप्ति के पश्चात् बुद्ध उरवेला से सर्वप्रथम ऋषिपतन (सारनाथ) आए। जहाँ उन्होंने 5 ब्राह्मण संन्यासियों को अपना प्रथम उपदेश दिया, जिसे **धर्मचक्रप्रवर्तन** कहा जाता है।
- **बुद्ध के जीवन से संबंद्ध 5 चिह्न:** जन्म (कमल व सांड) गृहत्याग (घोड़ा), ज्ञान (पीपल बोधि वृक्ष), निर्वाण (पदचिह्न), मृत्यु (स्तूप)।

गौतम बुद्ध : जीवन परिचय	
जन्म	563 ई. पू. लुम्बिनी वन (कपिलवस्तु)
माता	महामाया (कोलिय गणराज्य की कन्या)
पिता	शुद्धोधन (शाक्यगण के प्रधान)
बचपन का नाम	सिद्धार्थ
पत्नी	यशोधरा (गोप, बिम्ब, भद्रकच्छना)
मौसी	प्रजापति गौतमी
पुत्र	राहुल
घोड़ा	कन्थक
सारथी	चन्न (छन्न)
प्रारंभिक गुरु	आलार कलाम (सांख्य आचार्य) एवं रुद्रक रामपुत्र
मृत्यु	483 ई. पू.(कुशीनगर, उत्तर प्रदेश)

बौद्ध धर्म की शिक्षा एवं धर्म-दर्शन

- **चार आर्य सत्य** : (i) संसार दु:खों का घर है, (ii) तृष्णा (इच्छा) दु:खों का कारण है, (iii) इच्छाओं के त्याग से ही दु:खों से छुटकारा पाया जा सकता है तथा (iv) इच्छा को अष्टमार्ग पर चलकर समाप्त किया जा सकता है।
- **आष्टांगिक मार्ग** : (i) सम्यक् दृष्टि (ii) सम्यक् संकल्प (iii) सम्यक् वचन (iv) सम्यक् कर्म (v) सम्यक् आजीविका (vi) सम्यक् प्रयत्न (vii) सम्यक् विचार (viii) सम्यक् समाधि (अध्ययन)।
- **त्रिरत्न एवं शील के नियम** : बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं– बुद्ध, संघ एवं धम्म। बौद्ध भिक्षुओं के लिए 10 शील के नियम अनिवार्य हैं, जिनमें प्रथम पाँच उपासकों के लिए भी अनिवार्य हैं।
- दस शील के नियम जो नैतिक जीवन का आधार हैं– (i) अहिंसा (ii) सत्य (iii) अस्तेय (चोरी न करना) (iv) व्यभिचार न करना (v) मद्य का सेवन न करना (vi) असमय भोजन न करना (vii) सुखप्रद बिस्तर पर न सोना (viii) सुगंधित वस्तुओं का सेवन नहीं करना (ix) धन संचय न करना (x) स्त्रियों का संसर्ग न करना।

बौद्ध संगीतियाँ					
	काल	**स्थान**	**अध्यक्षता**	**शासक**	**कार्य**
प्रथम	483 ई. पू.	राजगृह (सप्तपर्णी गुफा)	महाकस्सप	अजातशत्रु	सुत्त एवं विनय पिटक का संग्रहण।
द्वितीय	383 ई. पू.	वैशाली	सुबुकामी	कालाशोक	बौद्धसंघ स्थविर एवं महासंघिक में बँटा।
तृतीय	251 ई. पू.	पाटलिपुत्र	मोग्लीपुत्ततिस्य	अशोक	अभिधम्म पिटक का संकलन कर कत्थावथु को जोड़ गया।
चतुर्थ	102 ई. पू.	कश्मीर (कुण्डलवन)	वसुमित्र (अश्वघोष-उपाध्यक्ष)	कनिष्क	बौद्ध धर्म हीनयान एवं महायान में बँटा तथा विभाषाशास्त्र का संकलन किया गया।

बौद्धग्रंथ एवं उनके लेखक	
रचनाकार	**कृतियाँ**
नागार्जुन	प्रज्ञापारमिता, सहस्त्रिका, चतुष्टिका, आर्यदेव
अश्वघोष	बुद्धचरित, सौन्दरानंद, सारिपुत्र प्रकरण, सूत्रालंकार, वज्रसूची
असंग	महायान सूत्रालंकार
वसुबंधु	अभिधर्म कोष
आर्यदेव	चतु:शतिका
दिग्नांग	प्रमाण समुच्चय
शांति देव	शिक्षा समुच्चय, सूत्र समुच्चय

भागवत् धर्म (वैष्णव धर्म)

- इस धर्म के प्रवर्तक **वासुदेव कृष्ण** माने जाते हैं, जिसका प्रथम उल्लेख **छांदोग्य उपनिषद्** में मिलता है। यह पहला संप्रदाय था, जिसने ब्राह्मण धर्म की बुराइयों में सुधारात्मक रुख प्रदर्शित किया।
- छांदोग्य उपनिषद में कृष्ण को **घोर अंगीरस** का शिष्य एवं **देवकी पुत्र** कहा गया है।

शैव धर्म के प्रमुख सम्प्रदाय

- **पाशुपथ** : शैव धर्म के इस सबसे प्राचीन सम्प्रदाय के प्रवर्तक **लकुलीश** थे। इसका उदय दूसरी सदी ईसा पूर्व में गुजरात में हुआ। इस सम्प्रदाय के लोग लगुण्ड या दंड धारण करते थे। पति (स्वामी), पशु (आत्मा) तथा पाश (बंधन) इसके तीन अंग हैं।
- **कापालिक** : इसके मुख्य आराध्य भैरव थे, जो शिव के अवतार माने जाते हैं। ये शरीर पर श्मशान की भस्म लगाते हैं तथा नरमुण्ड धारण करते हैं। **श्रीशैल** इनका प्रमुख केंद्र था।
- **लिंगायत** : इसके उपासक **जंगम** कहलाते थे। इसका प्रसार दक्षिण में हुआ। इसके प्रवर्तक **अल्लप्रभु** तथा उनके शिष्य **वासव** थे।
- **कालामुख** : इसका उदय कर्नाटक में हुआ। शिवपुराण में इसके अनुयायियों को **महाव्रतधर** कहा जाता है।
- **कश्मीरी शैव** : यह शुद्ध रूप से दार्शनिक एवं ज्ञानमार्गी सम्प्रदाय था। इसके संस्थापक **वसुगुप्त** थे। इसमें शिव को अद्वैत शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है।
- **नाथ संप्रदाय** : इसका उदय 10वीं सदी में हुआ। इसके प्रवर्तक **मच्छेन्द्रनाथ** थे। शिव को आदिनाथ मानते हुए नौ नाथों के दिव्य पुरुष के रूप में कल्पना की गयी है। 10-11वीं सदी में इसका प्रचार-प्रसार गोरखनाथ ने किया।

शाक्त सम्प्रदाय

- शाक्त उपासना के तीन केंद्र हैं– कश्मीर, कांची तथा असम। कश्मीर तथा कांची श्रीविद्या के प्रमुख स्थल हैं तथा असम कौल का प्रसिद्ध केंद्र है।

4 मौर्य काल

चन्द्रगुप्त मौर्य (321-298 ई. पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य अपने गुरु कौटिल्य (चाणक्य, विष्णुगुप्त अन्य नाम) की सहायता से मगध के शासक धनानन्द को अपदस्थ (हत्या) कर मगध पर अधिकार कर लिया।
- एरियन, स्ट्रैबो तथा जस्टिन ने चन्द्रगुप्त मौर्य को **सेण्ड्रोकोटस**, प्लूटार्क तथा एप्पिनायस ने **एण्ड्रोकोटस** तथा निर्याकस ने **सेण्ड्रोकोप्टस** कहा है। सर्वप्रथम 1793 में विलियम जोंस ने इन नामों की पहचान चन्द्रगुप्त मौर्य के रूप में की।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने 305 ई. पू. में सैल्यूकस को पराजित किया, जिसके पश्चात् दोनों के मध्य संधि हुई। इस संधि का उल्लेख **प्लूटार्क** ने किया है।

बिन्दुसार (298-273 ई. पू.)

- यूनानी लेखकों ने बिन्दुसार को **अमित्रचेट्स** या **अमित्रघात** कहा हैं। इसे सिंहसेन एवं भद्रसार भी कहा गया है। जैन ग्रंथ परिशिष्टपर्वन के अनुसार बिन्दुसार की माता दुर्धरा तथा मंत्री चाणक्य था।
- उसने यूनान, मिस्र, सीरिया आदि देशों से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए। यूनानी राजदूत **डायमेकस**, मिस्र के शासक टॉलेमी द्वितीय के राजदूत **डायनोसियस** बिन्दुसार के दरबार में आए।

अशोक (273-232 ई. पू.)

- बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, बिन्दुसार के 101 पुत्रों में सुसीम सबसे बड़ा, अशोक दूसरा तथा तिष्य सबसे छोटा था। 18 वर्ष की आयु में अशोक को **अवन्तिराष्ट्र** का प्रमुख बनाकर **उज्जैन** भेजा गया। वहाँ उसने विदिशा की राजकुमारी महादेवी से विवाह किया। महेन्द्र और संघमित्रा महादेवी की ही संतानें थीं।
- अशोक को उसके अभिलेखों में 'देवनामपिय '(देवताओं का प्रिय) कहकर संबोधित किया गया हैं **मास्की, गुर्जरा, निट्टूर** तथा **उद्गेलम** अभिलेख में उसका नाम 'अशोक' मिलता है। भब्रू अभिलेख में उसे 'प्रियदर्शी' तथा मास्की अभिलेख में 'बुद्धशाक्य' कहा गया है।
- दिव्यावदान के अनुसार अशोक को **उपगुप्त** ने बौद्ध धर्म में दीक्षित किया। एक उपासक के रूप में अशोक, शासन के 10वें वर्ष बोध गया, 12वें वर्ष निगालीसागर तथा 20वें वर्ष लुम्बिनी की यात्रा की।

अशोक के अभिलेख

- अशोक के अधिकत्तर अभिलेख प्राकृत एवं ब्राह्मी लिपि में है। उत्तर-पश्चिम के अभिलेख में **खरोष्ठी** एवं **अरमाइक** लिपि का प्रयोग हुआ है तथा अफगानिस्तान से प्राप्त अभिलेखों की लिपि **अरमाइक** एवं **यूनानी** दोनों हैं। अभिलेखों में अशोक के राज्याभिषेक के 8वें से 21वें वर्ष की घटनाएँ वर्णित हैं।
- उत्तर-पश्चिम के **शहबाजगढ़ी** एवं **मनसेहरा** अभिलेख 'खरोष्ठी' में तथा तक्षशिला एवं लघमान (काबुल) अभिलेख 'अरमाइक' लिपि में हैं। शर-ए-कुना (कन्धार) अभिलेख **द्विभाषी** है, जिसमें 'अरमाइक' एवं 'यूनानी' भाषा का प्रयोग किया गया है। लघु शिलालेख, स्तंभलेख (दीर्घ एवं लघु) एवं गुहालेखों की लिपियाँ केवल **ब्राह्मी** में हैं।
- **स्तंभलेख :** अशोक के स्तंभलेख 7 हैं, जो छह अलग-अलग स्थानों से प्राप्त हुए है। ये हैं– दिल्ली- टोपरा, मेरठ-दिल्ली, इलाहाबाद, रामपुरवा प्रथम एवं द्वितीय, लौरिया अरराज, लौरिया नंदनगढ़।

अशोक के 14 वृहद् शिलालेख एवं उनके विषय

- **पहला** – पशुबलि की निन्दा, समाज मे उत्सव का निषेध, सभी मनुष्य मेरी संतान की तरह हैं।
- **दूसरा** – मनुष्यों एवं पशुओं हेतु चिकित्सा प्रबंध, लोक-कल्याणकारी कार्य; चेर (केरलपुत्र), चोल, पाण्ड्य, सतियपुत्र तथा ताम्रपर्णी (श्रीलंका) का उल्लेख।
- **तीसरा** – धम्म संबंधी नियम; युक्त, रज्जुक, प्रादेशिक की नियुक्ति तथा प्रति पाँचवें वर्ष दौरे का आदेश
- **चौथा** – भेरी घोष की जगह धम्मघोष की घोषणा
- **पाँचवा** – धम्म महामात्रों की नियुक्ति के बारे में जानकारी
- **छठा** – प्रतिवेदक की चर्चा, आत्मसंयम की शिक्षा
- **सातवाँ** – सभी सम्प्रदायों के लिए सहिष्णुता का उल्लेख
- **आठवाँ** – अशोक की धम्मयात्राओं का उल्लेख, बोधिवृक्ष के भ्रमण का उल्लेख
- **नौवाँ** – विभिन्न प्रकार के समारोहों की निन्दा, सच्ची भेंट व सच्चे शिष्टाचार की व्याख्या।
- **दसवाँ** – ख्याति एवं गौरव की निन्दा, धम्म नीति की श्रेष्ठता पर बल, राज कर्मचारियों को प्रजा के हितों की चिंता करने का आदेश।
- **ग्यारहवाँ** – धम्म की विशेषता।
- **बारहवाँ** – सर्वधर्म समभाव, स्त्री महामात्र की चर्चा।
- **तेरहवाँ** – कलिंग युद्ध, पाँच सीमांत यूनानी राजाओं के नाम, पड़ोसी राज्यों तथा अपराध करनेवाली आटविक जातियों का उल्लेख।
- **चौदहवाँ** – लोगों को धार्मिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा।

मौर्य प्रशासन

- अर्थशास्त्र में उच्च अधिकारियों को **तीर्थ** कहा गया है, जिनकी संख्या 18 मिलती है। तीर्थ के अतिरिक्त 26 अध्यक्षों की भी चर्चा मिलती है।

18 तीर्थ

1. पुरोहित – प्रधानमंत्री, प्रमुख धर्माधिकारी
2. सेनापति – युद्ध विभाग
3. युवराज – राजा का उत्तराधिकारी
4. समाहर्त्ता – राजस्व विभाग का प्रमुख
5. सन्निधाता – राजकीय कोषाध्यक्ष
6. प्रदेष्टा – फौजदारी (कण्टकशोधन) न्यायालय का न्यायाधीश
7. व्यावहारिक – दीवानी (धर्मस्थीय) न्यायालय का न्यायाधीश
8. नायक – सेना का नेतृत्व, संचालक
9. कर्मान्तिक – उद्योग–धन्धों का प्रधान निरीक्षक
10. मंत्रिपरिषदाध्यक्ष – मंत्रिपरिषद् का अध्यक्ष
11. दण्डपाल – सेना की सामग्रियों को जुटानेवाला प्रधान अधिकारी
12. अन्तपाल – सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक
13. दुर्गपाल – आंतरिक दुर्गों का रक्षक
14. नगरक – नगर का प्रमुख अधिकारी
15. प्रशास्ता – राजकीय कागजातों को सुरक्षित व राजकीय आज्ञाओं को लिपिबद्ध करने वाला अधिकारी
16. दौवारिक – राजमहलों की देख–रेख करने वाला प्रधान अधिकारी
17. आटविक – वन विभाग का प्रधान अधिकारी
18. अन्तर्वशिक – सम्राट की अंगरक्षक सेना का प्रधान

- मौर्य साम्राज्य पाँच प्रांतों में विभक्त था। प्रांतों का शासन राजपरिवार के व्यक्ति ही चलाते थे, जिन्हें **कुमार** या **आर्यपुत्र** कहा जाता था। प्रांतों को **चक्र** कहा जाता था, जिसे कई 'मण्डलों' में विभाजित किया गया था। मण्डल के प्रमुख **महामात्य** नामक अधिकारी होते थे।
- मण्डल को कई जिलों में विभक्त किया जाता था, जिन्हें **विषय** या **अहार** कहा जाता था। इससे संबद्ध अधिकारी **प्रादेशिक, रज्जुक** और **युक्त** होते थे। जिले और गांव के बीच एक और स्तर था, जो **गोप** और **स्थानिक** के अधीन होता था। ये सभी अधिकारी **समाहर्त्ता** के अधीन होते थे।
- मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र के नगर प्रशासन का वर्णन किया है। नगर का प्रमुख **एस्ट्रोनोमोई** तथा जिले का अधिकारी **एग्रोनोमोई** होता था। पाटलिपुत्र नगर का प्रशासन 30 सदस्यों के एक समूह द्वारा चलाया जाता था। ये सदस्य 6 समितियों मे विभक्त थे तथा प्रत्येक समिति में 5 सदस्य थे।
- ये समितियाँ थीं– 1. उद्योग एवं शिल्पकला समिति, 2. विदेश समिति, 3. जनसंख्या समिति, 4. व्यापार एवं वाणिज्य समिति 5. वस्तु विक्रय निरीक्षण समिति तथा 6. बिक्री कर समिति।
- मौर्यकाल में दो न्यायालय थे – **धर्मस्थीय** (दीवानी) एवं **कण्टकशोधन** (फौजदारी)। धर्मस्थनीय के न्यायाधीश को 'धर्मस्थ' एवं कण्टकशोधन के न्यायाधीश को 'प्रदेष्टा' कहा जाता था।

सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति

- कौटिल्य ने वर्णाश्रम व्यवस्था की रक्षा के लिए इसे राजा के कर्त्तव्य से जोड़ा। दासों की स्थिति संतोषजनक थी तथा वे संपत्ति रख तथा बेच सकते थे।
- मेगस्थनीज ने भारतीय समाज को सात जातियों में विभाजित किया है– दार्शनिक, किसान, शिकारी एवं पशुपालक, शिल्पी एवं कारीगर, योद्धा, निरीक्षक एवं गुप्तचर तथा अमात्य एवं सभासद।
- कौटिल्य ने 9 प्रकार के दास बताए हैं– उदरदास, दण्डप्रणीत, दायागत, लब्ध, क्रीत, गृहजात, आत्मविक्रय, आहितक तथा ध्वजादृत।
- तक्षशिला, उज्जैन, वाराणसी शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे।

आर्थिक स्थिति

- अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन तथा वाणिज्य–व्यापार पर आधारित थी, जिन्हें सम्मिलित रूप से **वार्ता** अर्थात् वृत्ति का साधन कहा गया है। अर्थशास्त्र में तीन प्रकार की भूमि का उल्लेख है– कृष्ट (जुती हुई), अकृष्ट (बिना जुती हुई) तथा स्थल भूमि (ऊँची)।
- **अर्थशास्त्र में उल्लिखित मुद्रा :** पण, कर्षापण या धरण (चांदी का सिक्का), सुवर्ण (सोने का सिक्का), माषक (चांदी एवं ताँबे का सिक्का), काकणी (ताँबे का सिक्का), शतमान (चांदी का सिक्का)।
- तक्षशिला, पाटलिपुत्र, कौशाम्बी, उज्जैन, काशी, जावा, सुमात्रा, मिस्र, सीरिया, बोर्नियो व्यापार के मुख्य केन्द्र थे। दक्षिण में ताम्रपर्णि, पाण्ड्य एवं केरल मुक्ता, मणि, हीरे, सोना एवं शंख के लिए विख्यात थे।
- भूमिकर सैद्धांतिक रूप से 1/6 होता था, किन्तु व्यावहारिक रूप से 1/4 देना होता था। भूमिकर को **भाग** कहा जाता था। इसका संग्रह **ध्रुवाधिकरण** करता था।

प्रमुख कर

- भाग – कृषि उत्पादन का हिस्सा
- गुल्म – सैनिक कर
- निष्क्रम्य – निर्यात कर
- आयुधीय – सैनिक आपूर्ति
- पिण्ड कर – गांवों द्वारा उत्पाद के रूप में देय कर (वर्ष में एक बार)
- प्रतिकर – उत्पाद के रूप में देय कर
- प्रवेश्य – आयात कर
- शुल्क – सीमा शुल्क
- वर्तनी – पथ कर
- औपायनिक – विशेष अवसरों पर राजा को दी जानेवाली भेंट
- पार्श्व – अधिक लाभ होने पर व्यापारियों से लिया जाने वाला उपकर
- कौष्ठेयक – सरकारी जलाशयों के नीचे की भूमि पर
- प्रणय – आपातकालीन कर
- रज्जु – भूमि की नाप के समय
- परिहीनक – सरकारी भूमि पर पशुओं द्वारा की गयी हानि का हर्जाना

5 मौर्योत्तर काल

शुंग वंश (185-73 ई. पू.)

- पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई. पू. में मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की। सर्वमान्य मत के अनुसार शुंग ब्राह्मण थे और उज्जैन के निवासी थे।
- पुष्यमित्र द्वारा कराए गए अश्वमेध यज्ञ के पुरोहित पतंजलि थे जो उज्जैन के ब्राह्मण थे। इसके समय में भारत पर यवनों का आक्रमण हुआ, जिसका उल्लेख **मालविकाग्निमित्र** एवं **गार्गीसंहिता** में मिलता है। इस आक्रमण को पुष्यमित्र ने विफल कर दिया था।

कण्व वंश (75-30 ई. पू.)

- शुंग शासक देवभूति की एक दासी पुत्री से हत्या करवाकर उसके अधिकारी वसुदेव ने कण्व वंश की स्थापना की। पुराणों के अनुसार कण्वों ने 45 वर्ष तक शासन किया।

आंध्र सातवाहन वंश

- सातवाहन वंश का संस्थापक सिमुक था (60-37 ई. पू.)। इसकी राजधानी प्रतिष्ठान थी। आरंभिक सातवाहन शासक उत्तरी महाराष्ट्र में थे, जहाँ उनके प्राचीनतम सिक्के एवं अधिकांश अभिलेख प्राप्त हुए हैं। पुराणों में सातवाहनों को आंध्रभृत्य कहा गया है।
- **शातकर्णी प्रथम :** इसने 'दक्षिणाधिपति' तथा '**अप्रतिहतचक्र**' की उपाधि की। इसकी उपलब्धियों की जानकारी-नागानिका के नानाघाट अभिलेख से मिलती है।
- **गौतमीपुत्र शातकर्णी (106-130 ई.) :** पुराणों के अनुसार गौतमीपुत्र शातकर्णी इस वंश का 23वां शासक था। इसने शक शासक नहपान को पराजित किया।
- **वशिष्ठीपुत्र पुलमावी (130-159 ई.) :** यह एकमात्र शासक है, जिसका उल्लेख अमरावती से प्राप्त अभिलेख में हुआ है। शक शासक रूद्रदामन ने इसे दो बार पराजित किया, किंतु रूद्रादामन की पुत्री से उसका विवाह होने के कारण छोड़ दिया।
- **यज्ञश्री शातकर्णी (174 - 203 ई.) :** इसके सिक्के पर नाव का चित्र अंकित है। इसने शकों को पराजित किया।

शक (सीथियन)

- 'पर्सिपोलिस' तथा 'नक्शेरुस्तम' अभिलेखों से ज्ञात होता है कि शक, डेरियस के विजित प्रदेशों में रहते थे। पतंजलि के महाभाष्य से पता चलता है कि शक, यवनों के साथ आर्यावर्त की सीमाओं से बाहर रहते थे।
- शकों की कुल पाँच शाखाएँ थीं, जिसमें एक शाखा अफगानिस्तान में बस गयी। भारत में शकों की शाखाएँ तक्षशिला, मथुरा, महाराष्ट्र तथा उज्जैन में स्थापित हुई।

पह्लव (पार्थियन)

- ये मध्य एशिया के ईरान से आए थे। भारत में इस वंश का संस्थापक **मिथ्रेडेट्स प्रथम** (171-130 ई. पू.) था। **गोन्डोफर्निस** (20-41 ई.) इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था। इसने **देवव्रत** की उपाधि धारण की थी।

कुषाण

- कुजुल कडफिसस या कडफिसस प्रथम (15-64 ई.) ने आक्रमण कर पश्चिमोत्तर भारत पर अधिकार कर लिया। इसने 'महाराजा' की उपाधि धारण की तथा ताँबे के सिक्के चलाए। इसके सिक्कों पर **हर्मियस** का नाम मिलता है, जिससे पता चलता है कि उसने हर्मियस के **सामंत के रूप में** काम किया था।
- **विम कडफिसस** (65-75 ई.) ने सोने एवं तांबे के सिक्के चलवाए।
- कनिष्क कुषाण शासकों में सबसे योग्य था। इसके राज्यारोहण की सर्वमान्य तिथि 78 ई. है। इसी वर्ष इसने **शक संवत्** की शुरुआत की।
- कनिष्क के काल में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। इसके समय में गांधार एवं मथुरा कला शैली का जन्म हुआ अश्वघोष, पार्श्व, वसुमित्र, नागार्जुन तथा चरक इसी के दरबार में थे। कनिष्क ने पेशावर में एक मठ और विशाल स्तूप का निर्माण करवाया।
- कुषाणों की प्रशासन पद्धति में कुछ विदेशी लक्षण थे, जैसे क्षत्रपों (गवर्नरों) के माध्यम से शासन चलाना। कुषाण शासक **देवपुत्र**, **केसर**, **महीश्वर**, **षाहि**, **षाहानुषाहि** इत्यादि उपाधियां ग्रहण करते थे। कनिष्क द्वारा 'देवपुत्र' उपाधि ग्रहण करना यह दर्शाता है कि वह अपनी दैवी उत्पत्ति में विश्वास करता था।

नाग वंश

- इस वंश का उदय मध्य भारत तथा उत्तर प्रदेश के भूखण्डों पर हुआ। पुराणों के अनुसार पद्मावती, मथुरा तथा कांतिपुर में नागकुलों का शासन था। इनमें पदमावती और मथुरा के नाग वंश ने गुप्तों के पूर्व प्रमुखता प्राप्त की।

वाकाटक

- महाराष्ट्र और विदर्भ (बरार) में सातवाहनों के स्थान पर एक स्थानीय शक्ति वकाटकों ने प्रभुत्व स्थापित किया। इस वंश का संस्थापक **विंध्यशक्ति** था, जिसका मूल स्थान बरार था।

- विंध्यशक्ति का उत्तराधिकारी **प्रवरसेन प्रथम** था, जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की तथा चार अश्वमेध यज्ञ और एक वाजपेय यज्ञ किया।

विदेशी आक्रमण

हिन्द यूनानी (पदकब-हतममा)

- सिकंदर ने अपने पीछे एक विशाल साम्राज्य छोड़ा, जिसमें मैसेडोनिया, सीरिया, बैक्ट्रिया, पार्थिया, अफगानिस्तान एवं पश्चिमोत्तर भारत के कुछ प्रदेश शामिल थे। इस साम्राज्य का काफी बड़ा भाग सेल्युकस के अधीन रहा।
- ई०पू० 250 में बैक्ट्रिया के गवर्नर डियोडोटस एवं पार्थिया के गवर्नर औरेक्सस ने अपने-आप को स्वतंत्र घोषित कर दिया।
- डियोडोटस के वंश के एक शासक डेमेट्रियस-D ने ई०पू० 183 में मौर्योत्तर काल का प्रथम यूनानी आक्रमण किया।
- डेमेट्रियस ने पंजाब का एक बड़ा हिस्सा जीत लिया एवं साकल को अपनी राजधानी बनायी।
- किंतु डेमेट्रियस जिस वक्त भारत में व्यस्त था, स्वयं बैक्ट्रिया में यूक्रेटाड्स के नेतृत्व में विद्रोह हो गया एवं उसे बैक्ट्रिया से हाथ धोना पड़ा। उसका शासन पूर्वी पंजाब एवं सिंघ पर ही रहा गया।
- यूक्रेटाइड्स भी भारत की ओर बढ़ा और कुछ भागों को जीतकर उसने तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार भारत में यवन साम्राज्य' अब दो कुलों डेमेट्रियस एवं यूक्रेटाइड्स के वंशों में बंट गया।
- सबसे प्रसिद्ध यवन शासक मिनान्डर (ई०पू० 160-120) था, जो बौद्ध साहित्य में मिलिन्द के नाम से प्रसिद्ध है।
- पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी के उल्लेखानुसार मिनांडर के सिक्के भड़ौंच के बाजारों में खूब प्रचलित थे।
- इसके अलावा काबुल से मथुरा बुंदेलखंड तक से मिनांडर के सिक्के प्राप्त हुए हैं।
- बौद्ध ग्रंथ मिलिन्दपान्हो के अनुसार मिनान्डर ने भिक्षु नागसेन से बौद्ध धर्म में दीक्षा ली। मिनांडर की राजधानी साकल शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र थी और वैभव एवं ऐश्वर्य में पाटलिपुत्र से समानता रखती थी।
- यूनानियों के शासन का अंत सीथियनों (शकों) द्वारा किया गया। ।
- गार्गी संहिता के अनुसार 'ज्योतिष' के क्षेत्र में भारत यूनान का ऋणी है।
- भारतीयों ने यूनानियों से ही कैलेंडर प्राप्त किया।
- तक्षशिला के यवन राजा एण्टियालकिडास के राजदूत हेलियोडोरस ने (जो कि भागवत् धर्म का अनुयायी था) देवों के देव वसुदेव (विष्णु के अवतार 'कृष्ण') का बेसनगर (विदिशा) में एक गरुड़ध्वज स्थापित किया।
- हिन्द-यूनानियों ने उत्तर-पश्चिम में यूनान की प्राचीन कला हेलिनिस्टिक आर्ट का खूब प्रचलन किया। भारत की गंधार-कला शैली पर उपरोक्त की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है।

मौर्योत्तरकालीन सामाजिक स्थिति

- इस काल में अनेक विदेशी जातियां भारत में आयीं तथा यहीं बस गयीं। इनमें अधिकांश ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया क्योंकि बौद्ध धर्म जात-पात तथा वर्णभेद को नहीं मानता था।

मौर्योत्तरकालीन धार्मिक स्थिति

- इस काल में वैदिक धर्म का फिर से उत्थान हुआ। अब यज्ञों का स्थान मूर्ति पूजा ने ले लिया। जो वैदिक धर्म इस काल में प्रचलित था, उसकी दो प्रधान शाखाएं थीं– भागवत धर्म तथा शैव धर्म। विम कैडफिसस आदि कई विदेशियों ने शैव धर्म को अपनाया।

मौर्योत्तरकालीन आर्थिक स्थिति

- आर्थिक दृष्टि से यह काल प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल था। इस काल में व्यापार एवं वाणिज्य ने उन्नति की, जिसमें सड़कों ने उल्लेखनीय सहायता की।
- ईसा की पहली सदी से व्यापार मुख्यत: समुद्री मार्ग से होने लगा, इससे पूर्व व्यापार अधिकतर स्थल मार्ग से होता था।
- दीघनिकाय में 24, महावस्तु में 36 तथा मिलिन्दपन्हो में 75 प्रकार के व्यवसायों का उल्लेख है।
- मौर्योत्तर काल के प्रमुख बंदरगाह पाटल (सिंधु तट), भड़ौच (खंभात तट), सोपारा (महाराष्ट्र तट), वैजयन्ती (कर्नाटक तट), नौरा (केरल तट), मुजीरिस (केरल तट), तोंडी (केरल तट), ताम्रलिप्ति (बंगाल की खाड़ी), पोलुर (ओडिशा तट), मसूलीपट्नम (आंध्र प्रदेश), अरिकामेडु (पुडुचेरी तट), कावेरीपतनम (कावेरी तट), कोरकई (दक्षिणी तट) थे।

मौर्योत्तरकालीन कला-संस्कृति

- बौद्ध-ग्रंथ महावस्तु के अनुसार राजगृह में 36 प्रकार के शिल्पी रहते थे।
- मिलिन्द पान्हो में जिन 75 व्यवसायों का विवरण दिया गया है, उनमें से 60 शिल्प से संबंधित हैं।
- इस काल में कुषाणों ने गंधार कला-शैली का विकास किया।
- इस काल में मथुरा मूर्तिनिर्माण कला का केंद्र था।
- ह्वेनसांग ने कनिष्क के 178 विहारों तथा स्तूपों का वर्णन किया है।
- ई०पू० पहली शताब्दी के अंत में मथुरा में जैनियों ने एक विशेष कला-शैली को जन्म दिया जो मथुरा कला के नाम से विकसित हुआ।
- ई०पू० दूसरी शताब्दी में दक्कन में अमरावती कला का विकास हुआ।
- मौर्योत्तरकालीन चित्रकला के उदाहरण अजंता की गुफा संख्या 9 एवं 10 में मिलते हैं।
- अजंता की गुफा संख्या-9 में 16 उपासकों को स्तूप की ओर बढ़ते हुए दिखाया गया है।
- गुफा संख्या-10 में जातक कथाएँ अंकित हैं।

6 गुप्त काल

गुप्त राजवंश के शासक

समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख, कुमारगुप्त के विलसड स्तम्भ लेख और स्कंदगुप्त के भितरी स्तंभ लेख से गुप्त वंशावली का ज्ञान प्राप्त होता है। इन अभिलेखीय साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि गुप्तों का प्रथम ऐतिहासिक पुरुष श्रीगुप्त था।

श्रीगुप्त (275-300 ई.)

- श्रीगुप्त ने ही गुप्त राजवंश की स्थापना की। अत: इसे गुप्त राजवंश का संस्थापक माना जाता है।

घटोत्कच गुप्त (300-319 ई.)

- श्रीगुप्त के बाद इसका पुत्र घटोत्कच गुप्त शासक बना। इसने भी 'महाराज' की उपाधि धारणा की थी।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-334 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम को गुप्तवंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ही गुप्तवंश का पहला शासक था, जिसने '**महाराजाधिराज**' की उपाधि ग्रहण की।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपनी राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए लिच्छवी राजकुमारी **कुमारदेवी** से विवाह किया।

समुद्रगुप्त (334-375 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त शासक बना। चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा समुद्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी चुने जाने का वर्णन हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग स्तंभ प्रशस्ति के चौथे श्लोक में मिलता है जो चम्पू शैली में लिखा गया है।
- समुद्रगुप्त के सिक्कों से साम्य रखते हुए कुछ कांच नामधारी स्वर्ण सिक्के प्राप्त हुए हैं जिसके पृष्ठ भाग पर **'सर्वराजोच्छेता'** (समस्त राजाओं का उन्मूलन करने वाला) विरुद् अंकित है।
- समुद्रगुप्त को कभी भी पराजय का सामना नहीं करना पड़ा, इसी कारण विसेंट स्मिथ ने उसे 'भारत का नेपोलियन' कहा है।
- समुद्रगुप्त संगीत प्रेमी (वीणा वादन) था जो उसके वीणावादन प्रकार के सिक्कों से ज्ञात होता है जिसमें वीणा बजाते हुए समुद्रगुप्त की आकृति उत्कीर्ण है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (375-415 ई.)

- समुद्रगुप्त के पश्चात् उसकी प्रधान महिषी दत्तदेवी से उत्पन्न पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय गुप्त वंश का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं शक्तिशाली शासक बना।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का दूसरा नाम देव भी था। अभिलेखों (सांची) में उसे देवगुप्त, देवराज एवं देवश्री भी कहा गया है।
- अपनी राजनीतिक एवं आन्तरिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए चन्द्रगुप्त द्वितीय ने भी वैवाहिक सम्बन्धों का सहारा लिया।
- इस उद्देश्य से उसने तत्कालीन समय के तीन प्रमुख राजवंशों **नागवंश, वाकाटक** वंश एवं **कदम्ब** राजवंश के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये तथा उन्हें अपना हितैषी बना लिया।

कुमारगुप्त प्रथम 'महेन्द्रादित्य' (415-455 ई.)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के पश्चात् ध्रुवदेवी से उत्पन्न उसका पुत्र कुमारगुप्त प्रथम गुप्त साम्राज्य का शासक बना।
- कुमारगुप्त प्रथम का छोटा भाई **गोविन्दगुप्त** बसाढ़ (वैशाली) का राज्यपाल/सामंत था।

स्कन्दगुप्त 'विक्रमादित्य' (455-467 ई.)

- कुमारगुप्त प्रथम के पश्चात् उसका सुयोग्य पुत्र स्कन्दगुप्त गुप्त साम्राज्य का शासक बना। गुप्त संवत 136 अर्थात् 455 ई. का उसका जूनागढ़ अभिलेख मिला है तथा 467 ई. का उसका **गढ़वा** अभिलेख एवं चांदी के सिक्के मिले हैं। उससे ज्ञात होता है कि उसका शासनकाल 455 ई. से 467 ई. तक अर्थात् 12 वर्ष रहा होगा।

प्रशासनिक व्यवस्था

- गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था राजतंत्रात्मक थी। राजा प्रशासन के सर्वोच्च पद पर आसीन था। वह **कार्यपालिका**, **न्यायपालिका** एवं सैनिक मामलों का प्रधान था।

- गुप्त अभिलेखों में निम्नलिखित **पदाधिकारियों/मंत्रियों** का जिक्र मिलता है–
- **कुमारामात्य** – उच्च पदाधिकारियों का विशिष्ट वर्ग अथवा प्रान्तीय शासक। कुमारामात्य के कार्यालय को कुमारामात्याधिकरण कहा जाता था।
- **संधिविग्रहिक** – युद्ध एवं शान्ति अथवा विदेश मंत्रालय
- **महादण्डनायक** – युद्ध एवं न्याय का मंत्री
- **महासेनापति/महाबलाधिकृत** – सेना का सर्वोच्च अधिकारी
- **दण्डपाशिक** – पुलिस विभाग का प्रधान अधिकारी
- **विनयस्थिति स्थापक** – धर्म संबंधी मामलों का प्रधान अधिकारी, जो मंदिरों के प्रबन्ध की देखरेख एवं लोगों के नैतिक आचरण पर दृष्टि रखता था।
- **महाप्रतिहार** – राजमहल के रक्षकों का प्रधान एवं राजकीय दरबार का प्रमुख रक्षक पदाधिकारी। यह सम्राट से मिलने वाले लोगों को अनुमति पत्र देता था।
- **प्रतिहार** – अन्त:पुर के रक्षकों का प्रधान
- **महाक्षपटलिक** – अभिलेख विभाग का प्रधान (प्रमुख राजाज्ञाओं और भूमि अभिलेखों को लिपिबद्ध करने वाला)

- **महाभांडागाराधिकृत** – राजकीय कोष का प्रधान
- **सर्वाध्यक्ष** – सभी प्रमुख विभागों का प्रधानअधिकारी (कैबिनेट सचिव भी भाँति)
- **ध्रुवाधिकरण** – भूमिकर वसूल करने वाला प्रधान अधिकारी (राजस्व अधिकारी)
- **अग्रहारिक** – दान विभाग का प्रमुख अधिकारी
- **न्यायाधिकरण** – भूमि सम्बन्धी विवादों का निपटारा करने वाला
- **करणिक** – भूमि सम्बन्धी आलेखों को सुरक्षित रखने वाला अधिकारी। यह महाअक्षपटलिक के अधीन होता था।
- **पुस्तपाल** – कार्यालय के अभिलेखों को सुरक्षित रखने वाला प्रधान अधिकारी
- **भटाश्वपति** – अश्व सेना का प्रधान
- **महापीतलुपति** – हाथियों की सेना का प्रधान
- **पुरपाल** – नगर का प्रधान अधिकारी
- **टिकिन** – मार्गपति अथवा सड़कों की देख-रेख करने वाला प्रधान अधिकारी
- **प्रत्यान्तपाल** – सीमांत रक्षक
- **शौल्किक** – व्यापारिक वस्तुओं का शुल्क वसूलने वाला
- **द्रांगिक** – सीमावर्ती नगर में शुल्क वसूल करने वाला अधिकारी

- प्रशासन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए गुप्त साम्राज्य को प्रान्तों में विभाजित किया गया था। प्रान्त को **देश**, **अवनि** अथवा **भुक्ति** कहा जाता था।
- प्रान्त (भुक्ति) का विभाजन जिलों में किया गया था। जिला को विषय कहा जाता था जिसका शासक विषयपति कहलाता था।
- विषयपति की नियुक्ति प्राय: संबंधित प्रान्त के उपरिक द्वारा की जाती थी परन्तु कभी-कभी किसी विषय में सम्राट इनकी नियुक्ति करता था।

सैन्य प्रशासन

- गुप्त सेना का सर्वोच्च अधिकारी महाबलाधिकृत कहा जाता था। हाथियों की सेना के प्रधान को **महापीलुपति** तथा घुड़सवारों की सेना के प्रधान को भटाश्वपति कहा जाता था।

गुप्तकालीन अन्य कर

विष्टि – बेगार या नि:शुल्क श्रम
शुल्क – चुंगीकर
बलि – धार्मिक कर
हरिलाकर – हलों पर लगने वाला कर
अवल्गक – युद्ध के समय सेना के लिए प्रजा द्वारा खाद्य सामग्री आदि का प्रबन्ध
भट या भट्ट – पुलिस कर
चाट – लुटेरे द्वारा उत्पीड़न से मुक्ति का कर
दशापराध – दस प्रकार के अपराधों पर किये गये जुर्माने
चारासन – चारागाहों पर शुल्क
प्रणय – ग्रामवासियों पर लगाया गया अनिवार्य कर

आर्थिक व्यवस्था

- गुप्तकाल में उद्योग-धन्धे उन्नति पर थे। कपड़ा निर्माण (वस्त्र उद्योग) इस काल का सर्वप्रमुख उद्योग था।
- इसके अतिरिक्त हाथी दांत की वस्तुएं बनाना, मूर्तिकारी, चित्रकारी, शिल्पकार्य, मिट्टी के बर्तन तथा जहाज का निर्माण आदि अन्य उद्योग धन्धे थे।
- गुप्त शासकों ने सोने, चांदी एवं तांबे के सिक्के चलाए। सबसे अधिक स्वर्ण सिक्के चलाने का श्रेय गुप्तों को ही प्राप्त है। परन्तु सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण सिक्के चलाने का श्रेय कुषाणों को प्राप्त है।

सामाजिक व्यवस्था/स्थिति

- गुप्तकालीन समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित था। समाज में चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र के अतिरिक्त कुछ अन्य जातियां भी अस्तित्व में आ गई थीं।
- गुप्तकाल में स्त्रियों की दशा में गिरावट आई। इसका कारण उनका उपनयन संस्कार बन्द होना, बाल विवाह, पर्दा प्रथा तथा सती प्रथा का प्रचलन था।

कला और साहित्य

- गुप्तकाल में ही मंदिर का निर्माण प्रारम्भ हुआ। गुप्तकालीन मंदिरों में तकनीकी व निर्माण सम्बन्धी अनेक विशेषताएं हैं।
- गुप्त कला में चित्रकला अपनी पूर्णता को प्राप्त कर चुकी थी। वात्स्यायन के कामसूत्र में चित्रकला की गणना चौसठ कलाओं में की गई है।
- इसी समय पुराणों तथा महाकाव्यों रामायण एवं महाभारत को अन्तिम रूप प्रदान किया गया।

कालिदास की रचनाएं

मालविकाग्निमित्रम् – यह कालिदास का प्रथम नाटक है। इसमें **मालविका** और **अग्निमित्र** की प्रणय कथा वर्णित है। इसमें शुंग वंश का इतिहास वर्णित है।
विक्रमोर्वशीयम् – इसमें **उर्वशी** एवं **पुरुरवा** की प्रणय कथा है।
अभिज्ञानशाकुंतलम् – यह साहित्य एवं नाटक दोनों ही दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसमें **दुष्यंत** और **शकुंतला** की कथा है। विलियम जोंस ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया।
रघुवंशम् – यह 19 सर्गों का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। इसमें राम के पूर्वजों का वर्णन है।
कुमारसंभवम् – इसमें 17 सर्ग हैं जिसमें **प्रकृति चित्रण** तथा कार्तिकेय के जन्म की कथा वर्णित है।
मेघदूतम् – इसमें यक्ष एवं उसकी प्रेमिका के वियोग (विरह) का वर्णन है।
ऋतुसंहार – इसमें 6 ऋतुओं का वर्णन है।

7 गुप्तोत्तर काल

वल्लभी के मैत्रक

- वल्लभी के मैत्रक वंश की स्थापना **भट्टारक** ने गुप्त शासक बुद्धगुप्त के काल में की। यह गुप्तों का अधीनस्थ सामन्त था। इसने अपनी राजधानी वल्लभी में स्थापित की।

मौखरी वंश

- मुखर ने इस वंश की स्थापना की थी यह गुप्तों का सामंत था। बराबर और नागार्जुनी गुफाओं से प्राप्त अभिलेखों से तीन प्रारंभिक शासक के नाम प्राप्त हुए हैं– यज्ञवर्मा, शार्दूल वर्मा तथा अनन्त वर्मा।

गौड़ वंश

- इस वंश का उदय बंगाल में हुआ। इसका एक स्वतंत्र राजनीतिक सत्ता के रूप में पहला उल्लेख हड़हा अभिलेख में हुआ है। इस वंश का शासक शशांक हर्ष के समकालीन थे। उसने गौड़ वंश की राजधानी 'कर्ण सुवर्ण' में स्थापित की।

थानेश्वर का वर्द्धन या पुष्यभूति वंश

- गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद हरियाणा के अम्बाला जिला के थानेश्वर में पुष्यभूति वंश की स्थापना हुई। वाणभट्ट के अनुसार इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति था, हालांकि अभिलेखों में इसका नाम नहीं मिलता।
- राज्यवर्द्धन के पश्चात् 606 ई. में 16 वर्ष की आयु में हर्षवर्द्धन थानेश्वर का शासक बना। इसने आचार्य दिवाकरमित्र की सहायता से राज्यश्री को ढूँढ़ लिया तथा उसे सती होने से बचाया। राज्यश्री और कन्नौज के मंत्रियों की सहमति से हर्ष कन्नौज का भी शासक बन गया।
- हर्ष ने राजधानी को थानेश्वर से कन्नौज हस्तांतरित कर लिया। इसने गौड़ शासक शशांक को पराजित किया। कामरूप के शासक भास्करवर्मन तथा मगध के शासक माधव गुप्त से हर्ष ने मित्रता स्थापित की।
- हर्ष मंत्रिपरिषद् की सहायता से प्रशासन चलाता था। हर्ष के समय **भण्डि** इसका सचिव था। हर्ष के अभिलेखों और हर्षचरित में **संधि-विग्राहक** या अवन्ति (युद्ध एवं शांति का मंत्री), महाबलाधिकृत या सिंहनाद (सेनापति), **चट्ट-भट्ट** (पुलिस) आदि अधिकारियों का उल्लेख है।
- प्रशासनिक सुविधा के लिए साम्राज्य को प्रान्तों में बाँटा गया था, जिसे **भुक्ति** या **देश** कहा जाता था तथा इसका अधिकारी **उपरिक, राष्ट्रीय, आयुक्त, भोगपति, गोप्ता** आदि नामों से जाना जाता था। भुक्ति से छोटी इकाई **विषय** थी, जिसका प्रमुख 'विषयपति' कहलाता था। विषय के अंतर्गत कई पाठक होते थे।

हर्षकालीन प्रमुख अधिकारी

- बृहदाश्वर (कुन्तल) – अश्वारोही सेना का सेनापति
- कटुक (स्कन्दगुप्त) – हस्ति सेना का सेनापति
- पथि – सैनिकों के शिविरों का अध्यक्ष
- राजस्थानीय – वायसराय
- कुमारामात्य – राजकुमार का परामर्शदाता था, उच्च प्रशासकीय सेवा में नियुक्त अधिकारी
- दौस्साधनिक – ग्रामाध्यक्ष
- भोगिक या भोगपति – राजकीय कर एकत्र करने वाला

बंगाल का पाल एवं सेन वंश

- **गोपाल (750-70 ई.) :** वप्यट का पुत्र गोपाल ने राज्य में शांति व्यवस्था स्थापित की। इसे बिहारशरीफ के पास ओदन्तपुर विहार तथा नालंदा में एक विहार बनवाया।
- **धर्मपाल (770-810 ई.) :** इसे उत्तरी भारत में सर्वोच्चता सिद्ध करने के लिए प्रतिहार और राष्ट्रकूट शासकों से संघर्ष करना पड़ा। गुजराती कवि सोड्ढल ने अपनी 'उदयसुन्दरी कथा' में उसे **उत्तरापथस्वामी** की उपाधि से विभूषित किया है।
- धर्मपाल ने परमेश्वर, परमभट्टारक और महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। उसने **सोमपुरी** (पहाड़पुर) और **विक्रमशिला** विहार की स्थापना की। इसने कन्नौज में एक दरबार का (खलिमपुर ताम्रपत्र के अनुसार) तथा पाटलिपुत्र में एक दरबार का आयोजन किया। इसने नालंदा विश्वविद्यालय को 200 गांव अनुदान दिए।

सेन वंश

- पालों के बाद **सामंत सेन** ने 'राढ़' में सेन वंश की स्थापना की। इसके पुत्र विजयसेन (1095-1158 ई.) ने बंगाल को पुनः राजनीतिक एकता प्रदान की तथा कलिंग, कामरूप तथा मगध को विजित किया। कवि **धोयी** द्वारा रचित 'देवपाड़ा-प्रशस्ति' में विजयसेन की विजयों का उल्लेख है।

उड़ीसा के पूर्वी गंग

इस वंश का संस्थापक अनन्तवर्मा चोड़गंग (1076-1148 ई.) था। इसने पुरी के प्रसिद्ध **जगन्नाथ मंदिर** का निर्माण करवाया। इस वंश के शासकों ने उड़ीसा और जाजनगर की रक्षा हेतु अंतिम समय तक प्रयास किए। लगभग 14वीं सदी में उड़ीसा पर मुसलमानों ने आधिपत्य स्थापित कर लिया।

परमार वंश (मालवा)

- इस वंश का संस्थापक **उपेन्द्र** था तथा प्रथम स्वतंत्र शासक **सीयक** या **श्रीहर्ष** था। परमार प्रारंभ में राष्ट्रकूटों के सामंत थे।
- भोज (1000-1060 ई.) इस वंश का सर्वप्रसिद्ध शासक था। इसने उज्जैन के स्थान पर **धार** को अपनी राजधानी बनाया। इसने चालुक्य विक्रमादित्य चतुर्थ और कलचूरी गांगेयदेव को पराजित किया, किन्तु चंदेल विद्याधर ने भोज को पराजित किया।
- इस वंश का संस्थापक **हरिश्चंद्र** था, किन्तु इस वंश का वास्तविक संस्थापक नागभट्ट प्रथम (730-56 ई.) था। इसने अरबों को सिंध से आगे नहीं बढ़ने दिया। यह जानकारी ग्वालियर प्रशस्ति से प्राप्त होती है।
- मिहिरभोज का साम्राज्य काठियावाड़, पंजाब, मालवा तथा मध्यप्रदेश तक विस्तृत था। उसने **आदिवराह** की उपाधि धारण की। उसने चांदी के **द्रम्म** सिक्के चलवाए।

गुजरात (अन्हिलवाड़) के चालुक्य (सोलंकी)

- मूलराज (942-95 ई.) इस वंश का संस्थापक था। उसने अन्हिलवाड़ को अपनी राजधानी बनाया। मूलराज के पश्चात् चामुण्डराज (995-1008 ई.) दुर्लभ राज (1008-1022 ई.) शासक हुए।
- जयसिंह (1094-1143 ई.) इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था। उसने **सिद्धराज** की उपाधि धारण की तथा प्रसिद्ध जैन आचार्य हेमचन्द्र को संरक्षण दिया। उसके राज्य का विस्तार पश्चिम में काठियावाड़ और गुजरात तथा पूर्व में भिलसा और दक्षिण में बलिक्षेत्र एवं सांभर तक फैली थी।
- भीम द्वितीय (1178 ई.) इस वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक था, जिसने गोरी को पराजित किया। बाद में 1187 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने भीम द्वितीय को पराजित किया। 12वीं सदी के अंत में भीम द्वितीय के एक मंत्री लवण प्रसाद ने गुजरात में बघेल वंश की स्थापना की।

शाकम्भरी के चौहान (दिल्ली एवं अजमेर)

- सातवीं सदी में सांभर-अजमेर के क्षेत्र में वासुदेव ने शाकम्भरी के चौहान वंश की स्थापना की। चौहान प्रतिहारों के सामन्त थे। इसके बाद पूरणमल, जयराज, विग्रहराज प्रथम, चन्द्रराज, गोपराज आदि अनेक सामंतों ने शासन किया।
- विग्रहराज का भतीजा तथा सोमेश्वर का पुत्र **पृथ्वीराज तृतीय** इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था। इसे **रायपिथौरा** भी कहा जाता है। इसने चंदेल शासक परमर्दिदेव को 1182 ई. में पराजित किया, जिसमें परमर्दिदेव के लोकप्रसिद्ध सेना नायकों **आल्हा-उदल** ने युद्ध किया था। पृथ्वीराज रासो का रचयिता चन्दबरदाई पृथ्वीराज तृतीय का राजकवि था।
- 1191 ई. में मुहम्मद गोरी तथा पृथ्वीराज तृतीय के मध्य हुए तराइन के प्रथम युद्ध में गोरी पराजित हुआ, किन्तु अगले वर्ष 1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर दिया। पृथ्वीराज को बन्दी बना लिया गया तथा कुछ समय पश्चात् उसकी हत्या कर दी गयी। 1192 ई. में ही ऐबक ने दिल्ली पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

कन्नौज का गहड़वाल वंश

- गुर्जर-प्रतिहारों के पश्चात् चन्द्रदेव ने कन्नौज में गहड़वाल वंश की स्थापना की। गहड़वालों को **काशी नरेश** भी कहा जाता है। चन्द्रदेव ने 1080 से 1110 ई. तक शासन किया तथा **महाराजाधिराज** की उपाधि धारण की।

जेजाकभुक्ति (बुंदेलखण्ड) का चंदेल वंश

- इस वंश के प्रारंभिक शासक प्रतिहारों के सामंत थे। **नन्नुक** इस वंश का पहला राजा था। इसके बाद वाक्पति, जयशक्ति, विजयशक्ति, राहिल, हर्ष राजा हुए। चंदेलों ने **खजुराहो** को अपनी राजधानी बनाया।

त्रिपुरी के कलचुरी

- नर्मदा के दक्षिण और गोदावरी के उत्तर में स्थित कलचुरी वंश की स्थापना 845 ई. में **कोकल्ल** ने की थी। इस वंश के शासक युवराज ने **केयूरवर्ष** की उपाधि धारण की। युवराज के दरबार में ही राजशेखर ने **काव्यमीमांसा** और **विद्धसालभंजिका** की रचना की थी। इसी के काल में राजशेखर कन्नौज छोड़कर त्रिपुरी आया था।

कला – संस्कृति

- हर्ष कला और शिक्षा दोनों का संरक्षक था। वे स्वयं एक लेखक थे और उन्होंने तीन संस्कृत नाटक नागानंद, रत्नावली, प्रियदर्शिका लिखे। उसके राजस्व का एक चौथाई भाग विद्वानों के संरक्षण में चला जाता था।
- ह्वेन त्सांग प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय का काफी विशद वर्णन करता है जो हर्ष के शासनकाल के दौरान अपने चरम पर था।
- नालंदा में लगभग 10,000 छात्र और 2,000 शिक्षक थे।
- पाठ्यक्रम में वेद, बौद्ध धर्म, दर्शन, तर्क, शहरी नियोजन, चिकित्सा, कानून, खगोल विज्ञान आदि शामिल थे।
- भारतीय कला और वास्तुकला में पल्लवों का योगदान बहुत अधिक है।
- वास्तव में दक्षिण में भारतीय वास्तुकला की द्रविड़ शैली का इतिहास पल्लवों के साथ शुरू हुआ।
- यह एक क्रमिक विकास था जो गुफा मंदिरों से शुरू होकर अखंड राठों तक और संरचनात्मक मंदिरों में समाप्त हुआ।
- ममल्लापुरम में पांच रथों को लोकप्रिय रूप से श्पंच पांडव रथ (रॉक-कट रथ) कहा जाता है, जो वास्तुकला की पांच अलग-अलग शैलियों को दर्शाता है।
- कांची में कैलासनाथ मंदिर और मामल्लपुरम में शोर मंदिर पल्लवों के शुरुआती संरचनात्मक मंदिरों के बेहतरीन उदाहरण हैं। कैलासनाथ मंदिर पल्लव कला का सबसे बड़ा वास्तुशिल्प कृति है।
- पल्लवों ने मूर्तिकला के विकास में भी योगदान दिया था।
- मंडपों की दीवारों पर सुंदर मूर्तियां हैं।
- मामल्लपुरम में श्गंगा के अवतरण या अर्जुन की तपस्याश को दर्शाती मूर्ति शास्त्रीय कला का एक उत्कृष्ट नमूना है।
- सित्तनवासल की गुफाओं में चित्र पल्लव काल के थे।

8 दिल्ली सल्तनत

गुलाम वंश (1206-90 ई.)

- इसे गुलाम वंश इसलिए कहा गया है, क्योंकि इसके तीन सबसे महत्त्वपूर्ण शासकों – कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश और बलबन का राजनीतिक जीवन गुलाम के रूप में शुरू हुआ था।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-10 ई.)

- यह मुहम्मद गोरी का गजनी से खरीदा हुआ दास था। इसके साहस उदारता, स्वामिभक्ति के कारण गोरी ने इसे **अमीर-ए-आखूर** (अस्तबलों का अधिकारी) नियुक्त किया तथा 1192 ई. में तराइन के दूसरे युद्ध के बाद भारतीय विजित क्षेत्रों का प्रबंधक बना दिया।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते हुए घोड़े से गिरकर उसकी मृत्यु हो गयी। इसने कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में **कुतुब मीनार** का निर्माण आरंभ करवाया। उसने दिल्ली में **कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद** तथा अजमेर में **अढ़ाई दिन का झोपड़ा** मस्जिद का निर्माण करवाया।

इल्तुतमिश (1210-36 ई.)

- ऐबक की मृत्यु के पश्चात् आरामशाह दिल्ली सल्तनत का शासक बना, किन्तु बदायूँ का इक्तादार इल्तुतमिश ने उसे अपदस्थ कर स्वयं सुल्तान बन गया।
- इल्तुतमिश ने अपनी बुद्धिमता से मंगोलों के आक्रमण से स्वयं को बचाया। उसने जलालुद्दीन मंगबर्नी को संरक्षण देने से मना कर दिया, जो मंगोल नेता चंगेज खाँ के भय से भाग रहा था।
- प्रशासन को संगठित करने के उद्देश्य से इल्तुतमिश ने चालीस तुर्क सरदारों के एक गुट **चालीसा** या **तुर्कान-ए-चहलगानी** का गठन किया। इसने राज्य के विभिन्न अंगों को व्यवस्थित कर सल्तनत को एक निश्चित स्वरूप प्रदान किया।
- इसने चांदी का **टंका** और तांबे का **जीतल** मुद्रा को प्रचलित किया। शुद्ध अरबी सिक्के चलाने वाला प्रथम तुर्क सुल्तान इल्तुतमिश था। इसने सिक्के पर टकसाल का नाम लिखने की परम्परा शुरू की।

रजिया (1236-40 ई.)

- रजिया दिल्ली के अमीरों तथा जनता के सहयोग से सिंहासन पर बैठी। अन्य तुर्क सरदार निजामुल मुल्क जुनैदी, मलिक अलाउद्दीन जानी, मलिक सैफुद्दीन कूची, कबीर खाँ, मलिक इजाउद्दीन सलारी आदि रजिया के विरोधी हो गए।
- रजिया ने इख्तियारुद्दीन एल्तगीन को 'अमीर-ए-हाजिब' जमालुद्दीन याकूत (अबीसीनिया का निग्रो जाति का था) को 'अमीर-ए-आखूर' तथा मलिक हसन गोरी को 'प्रधान सेनापति' नियुक्त किया। ये सभी गैर-तुर्क अमीर थे। ऐसा करना तुर्क अमीरों ने अपने विरुद्ध समझा और उनकी नाराजगी और बढ़ गयी।
- मसूदशाह के काल में चालीस सरदारों में से बलबन को **अमीर-ए-हाजिब** नियुक्त किया गया। धीरे-धीरे सारी शक्ति बलबन ने अपने हाथ में एकत्र कर ली। 1245 में बलबन ने मंगोल नेता मंगु के आक्रमण के विरुद्ध सैन्य संचालन किया और लाहौर, कच्छ और मुल्तान पर अधिकार कर लिया।
- नासिरुद्दीन महमूद ने राज्य की समस्त शक्ति बलबन को सौंप दी। 7 अक्टूबर, 1249 को सुल्तान ने बलबन को **उलूग खाँ** की उपाधि प्रदान की तथा बाद में '**अमीर-ए-हाजिब**' बनाया।

गयासुद्दीन बलबन (1265-87 ई.)

- नासिरुद्दीन के साथ ही 'शम्शी वंश' का अंत हुआ तथा बलबनी वंश का शासन शुरू हुआ।
- पश्चिमोत्तर में मंगोलों से निपटने के लिए **दीवान-ए-अर्ज** (सैन्य विभाग) का गठन कर, इस पर इमादुलमुल्क को नियुक्त किया। सैनिकों को नकद वेतन दिया तथा तुर्की प्रभाव को कम करने के लिए **सिजदा** (सुल्तान के समक्ष घुटनों के बल बैठकर सिर झुकाना) और **पायबोस** (सुल्तान के पांव चुमना) तथा **नवरोज उत्सव** को अनिवार्य कर दिया। नवरोज एक ईरानी उत्सव था।
- बलबन ने विद्रोहियों के प्रति '**लौह एवं रक्त**' की नीति अपनायी। उसने एक अत्यन्त कुशल जासूस व्यवस्था का गठन किया।

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

- खिलजी वास्तव में तुर्क जनजाति से संबंधित थे, किन्तु लम्बे समय से अफगानिस्तान में रहने के कारण गैर-तुर्क माना जाने लगा। खिलजी के सत्ता में आने से प्रशासन निम्न वर्गीय तुर्क, अफगान और हिन्दुस्तानियों के हाथ में आ गया।

जलालुद्दीन खिलजी (1290-96 ई.)

- 13 जून, 1290 को 70 वर्षीय जलालुद्दीन का राज्याभिषेक **किलोखरी** में हुआ। इसने अपने विरोधियों के प्रति भी उदारता की नीति अपनायी। इसने हिन्दुओं को अपने धर्म तथा रीति-रिवाजों के पालन की पूर्ण स्वतंत्रता दी।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

- 20 जुलाई, 1296 ई. को अलाउद्दीन खिलजी सुल्तान बना। इसे अली **गुरशस्प** भी कहा जाता था।
- अलाउद्दीन ने द्वितीय सिकन्दर (सानी) की उपाधि धारण की तथा खलीफा की सत्ता को स्वीकार किया। इसने धार्मिक उदारता की नीति को जारी रखा शरीयत को शासन का आधार बनाने से इंकार कर दिया।
- गुप्तचर विभाग का प्रमुख **बरीद-ए-मुमालिक** कहलाता था। गुप्तचर **बरीद** थे। **मुन्ही** या **मुन्हीयन** सूचना प्रदाता थे।

तुगलक वंश (1320-1414 ई.)

सल्तनत काल का यह वंश सर्वाधिक अवधि तक चला तथा इस काल में सल्तनत की सीमा का सर्वाधिक विस्तार हुआ।

गयासुद्दीन तुगलक (1320-25 ई.)

- गयासुद्दीन तुगलक एक महत्त्वाकांक्षी शासक था, जिसने दक्षिण तक सल्तनत का प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित किया। वारंगल पहला दक्षिणी राज्य था, जिस पर प्रत्यक्ष नियंत्रण के अंतर्गत लाया गया।